आबिद सुरती

चेरी के फूल

वह महिना मार्च का था। मैं कामाकुरा (जापान) में था। जापान यानी उगते सूरज का देश। कागज़ के घर और कागज़ की दीवारों (पार्टिशन) का देश। कागज़ के कन्दील (लालटेन) और कागज़ के खिलौनों (ओरीगैमी) का देश। एक सुबह आँखें खुलीं तो सूर्य के दर्शन करने के लिए मैंने एक दीवार को खिसका कर बाहर देखा। और फिर देखता ही रह गया। मानों रात में कोई चमत्कार हो गया हो। किसी परी ने आकर सारे पेड़ों पर अपनी जादुई छड़ी घुमा दी थी जैसे! एक ही रात में कामाकुरा के सारे पेड़ चेरी के फूलों से लद गए थे। बसन्त ऋतु का आगमन था यह।

मैं बाहर, खुले में दौड़ आया। जी चाहा नाचूँ-गाऊँ। अपने गाँव में होता तो मेरे साथ कई लड़के-लड़कियाँ जुट जाते। पंजाब में होता तो सब मिलकर बल्ले-बल्ले (भांगडा) ही शुरू कर देते। पर यहाँ, फूलों के मौसम में मैं तन्हा था। फिर भी मेरे होंठ गुनगुनाने लगेः

धरती के फूल, आकाश के फूल
चेरी के फूल, चेरी के फूल!
हाँ, हाँ, हाँ
गरज़ते बादल, बरसते बादल
महकते फूल, चेरी के फूल!
ही, ही, ही।

आ जा किशना, आई राधा
तड़पते फूल, चेरी के फूल!
हो, हो, हो।

जापानियों के लिए जापान में ही रचा यह गीत जब मैं दोस्तों के बीच वहाँ गाता था, तब वे बीच-बीच में हा, हा, हा, ही, ही, ही, हो, हो, हो करते थे। और हम समूह गीत का मज़ा लेते थे। ऐसे में बसन्त पंचमी की कई यादें ताज़ा हो जाती थीं।

बचपन में इसी दिन मैंने पहली बार नेकर पहनी थी और हमारे घर पट्टी पूजा-सी कोई रस्म भी हुई थी। यानी स्कूल जाने का मेरा पहला दिन उत्सव का दिन था। मेरे गले में गेन्दे के फूलों की माला डाली गई थी। नए-नए कपड़ों के साथ जूते भी पहनाए गए थे। और मुँह मीठा कर, मुझे हँसते-गाते ढोल बजाते शिशु-मन्दिर भेजा गया था।

बसन्त हमारी छह ऋतुओं में से एक है। ज़ाहिर है कि विदेश में मुझे सरसों के खेत और गेन्दे के फूलों की बिछात भी याद आए। ऐसी सुहानी यादें हमें अक्सर दुखी कर देती हैं। अलबत्ता मैं दुखी नहीं था क्योंकि मेरे चारों ओर चेरी के फूल मुस्कुरा रहे थे। चकमक